अध्याय - चतुर्थ

प्रदत्त विश्लेषण परिणाम एवं व्याख्या

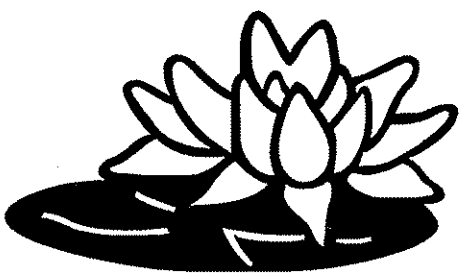

अध्याय चतुर्थ
प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 भूमिका

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध प्रक्रिया के आगमन तथा निगमन तर्क के प्रयोग को व्यक्त करता है। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं की स्वीकृति हेतु प्रदत्तों को समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण के रूप से होता है। प्रदत्तों के विश्लषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना अनेक परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है।

4.2 परिकल्पनाओं का परीक्षण

प्रस्तुत अध्ययन में उचित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं की जाँच करने के उपरांत त्वरित प्रदत्तों के निरंतर प्रस्तुतीकरण के लिए शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणामों की व्याख्या की गई है जो अंग्राकित सारणीयों में प्रस्तुत है।

4.2.1 परिकल्ना क्रमांक–1 (Ho^1)

प्रस्तुत शोधकार्य की प्रथम परिकल्पना (Ho^1) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक संबंध नहीं होगा। इसका आशय यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में वृद्धि का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्र. 4.2.1 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक–4.2.1

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध–गुणांक

क्रमांक No.	चर Variable	समूह संख्या N	मुक्तांश df	सहसंबंध–गुणांक r
1	अध्यापन अभिवृत्ति	100	98	0.665**
2	व्यावसायिक संतुष्टि	100	98	

** Significant at 0.01 level

तालिका क्र. 4.2.1 में प्रस्तुत आंकड़ो से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.665** है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। इसलिए यह परिकल्पना (Ho^1) निरस्त की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य उच्च धनात्मक सहसंबंध है।

4.2.2 परिकल्पना क्रमांक–2 (Ho^2)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की द्वितीय परिकल्पना (Ho^2) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के बीच सार्थक संबंध नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।

इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रमांक 4.2.2 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.2

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्रमांक No.	चर Variable	समूह संख्या N	मुक्तांश df	सहसंबंध–गुणांक r
1	सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति	56	54	0.046
2	व्यावसायिक संतुष्टि	56	54	

Not Significant at 0.05 level

तालिका क्रमांक 4.2.2 में प्रस्तुत आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के बीच सहसंबंध गुणांक का मान 0.046 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना (H_0^2) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि अध्यापकों की सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है।

4.2.3 परिकल्पना क्रमांक–3 (H_0^3)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की तृतीय परिकल्पना (H_0^3) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के बीच सार्थक संबंध नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति का उनकी व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है। इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रमांक 4.2.3 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 4.4

प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति और व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांक

क्रमांक No.	चर Variable	समूह संख्या N	मुक्तांश df	सहसंबंध-गुणांक r
1	नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति	44	42	0.189
2	व्यावसायिक संतुष्टि	44	42	

Not Significant at 0.05 level

तालिका क्रमांक 4.2.3 में प्रस्तुत आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.189 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः यह परिकल्पना (Ho^3) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नकारात्मक अध्ययन अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक संतुष्टि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं है।

4.2.4 परिकल्पना क्रमांक-4 (Ho^4)

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य की चतुर्थ परिकल्पना (Ho^4) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर लिंग का कोई असर नहीं होता है।

इसका परीक्षण करने हेतु तालिका क्रमांक 4.2.4 से प्राप्त परिणामों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक 4.2.4

प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्तियों की तुलना

क्रमांक No.	लिंग Gender	समूह संख्या N	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	मुक्तांश df	टी मान t
1	महिला	55	207.91	81.18	98	1.55
2	पुरूष	45	232.20	73.61		

Not Significant at 0.05 level

तालिका क्रमांक 4.2.4 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति का t परीक्षण का मान 1.55 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसीलिए यह परिकल्पना (H_0^4) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि लिंग का अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति पर असर नहीं होता है।

4.2.5 परिकल्पना क्रमांक–5 (H_05)

प्रस्तुत अनुसंधान की पाँचवी परिकल्पना (H_05) यह है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि में सार्थक अतंर नहीं होगा। इसका तात्पर्य यह हुआ कि लिंग का अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।

तालिका क्रमांक 4.2.5

प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवम् पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि की तुलना

क्रम No.	लिंग Gender	समूह संख्या N	मध्यमान Mean	मानक विचलन S.D.	मुक्तांश df	टी मान t
1	महिला	55	61.73	18.20	98	0.041
2	पुरूष	45	61.58	18.20		

Not Significant at 0.05 level

तालिका क्रमांक 4.2.5 में प्रस्तुत आंकड़ों का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का t परीक्षण का मान 0.041 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इसलिए यह परिकल्पना (Ho^5) स्वीकृत की जाती है। इसका तात्पर्य यह है कि लिंग का अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।

4.7 परिणामों की विवेचना

प्रथम परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणामों (तालिका क्र.4.2.1) के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अध्यापन अभिवृत्ति का व्यावसायिक संतुष्टि पर असर होता है। प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति जब सकारात्मक होती है तो वे अपने व्यवसाय से संतुष्ट रहते हैं। सकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति के कारण वे अपने कार्य के प्रति प्रतिबद्ध रहते हैं। अपने व्यवसाय के प्रति एकनिष्ठता की भावना उनमें देखने को मिलती है। जिससे अध्यापन प्रक्रिया भी प्रभावित होती है। अपने कार्य से संतुष्ट रहने के कारण अध्यापकों की व्यावसायिक क्षमता में भी वृद्धि होती है। और जब अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति नकारात्मक होती है तो वे निश्चित ही अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं रह सकते। यह निष्कर्ष रेड्डी बालकृष्णा पी. (1989) द्वारा किये गए अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश है।

द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण के बाद प्राप्त परिणामों (तालिका क्र.4.2.2) का विश्लेषण करने के बाद पाया गया कि कुछ अध्यापक ऐसे थे जिनकी अध्यापन अभिवृत्ति सकारात्मक थी लेकिन वे अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं थे। इसका यह कारण हो सकता है कि वर्तमान समय में अध्यापकों के उपर अधिक कार्यभार डाला जाता है। उनसे स्कूली रिकार्डस, विद्यार्थियों के प्रवेश निगमन से जुड़े आंकड़े, जनगणना, टीकाकरण व राज्य की बहुत सी योजनाओं के कार्यान्वयन से जुड़े कार्य करवाये जाते हैं। बहुत से अध्यापकों को कार्य करने का अपेक्षित माहोल नहीं मिल पाता कि जिससे वे प्रभावी ढंग से कार्य कर सकें।

शिक्षित बेरोजगारों की बढ़ती हुई तादाद कि वजह से बहुत से ऐसे उच्च शैक्षणिक स्तर वाले व्यक्तियों को भी माध्यमिक या महाविद्यालयों में नौकरी न मिलने के कारण मजबूरी में प्राथमिक विद्यालय में कार्य करना पड़ रहा है। वेतन मान का निम्नस्तर होने के कारण भी अध्यापक व्यवसाय से असंतुष्ट रहते हैं।

तृतीय परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका क्र.4.2.3) का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि जिन अध्यापकों की अध्यापन अभिवृत्ति नकारात्मक है वे अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं है इसीलिए हम कह सकते है कि विवशता की स्थिति में अध्यापन कार्य को नौकरी के तौर पर अपनाने के कारण वे अध्यापक व्यवसाय से संतुष्ट नहीं होते हैं। अन्य व्यवसाय को अपनाने का अवसर न मिलने के कारण मजबूरी में अध्यापन व्यवसाय से जुड़े हैं इसीलिए उन अध्यापकों की नकारात्मक अध्यापन अभिवृत्ति पायी गई है। वे अध्यापक अध्यापन कार्य के प्रति उन्मुख नहीं हैं और इस कार्य को गौरवपूर्ण नहीं मानते है। अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति न होने के कारण वे अध्यापक अपने व्यवसाय से संतुष्ट नहीं हो पाते हैं।

चतुर्थ परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका क्र.4.2.4) के आधार पर हम कह सकते हैं कि वर्तमान आधुनिक युग में समाज में स्त्री एवं पुरूष के सोचने का ढंग, कार्य करने का तरीका आदि में समानता देखने को मिलती

है। आज महिलाएँ भी पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं। वर्तमान शिक्षा जगत की समस्याओं का महिला और पुरूष दोनों ही समान रूप से सामना कर रहे हैं। महिलाएँ और पुरूष दोनों हर प्रकार के व्यवसाय में समान रूप से कार्य करते हुए नजर आते हैं। इसीलिए ऐसा कहा जा सकता है कि लिंग का अध्यापन अभिवृत्ति पर कोई असर नहीं होता है। यह निष्कर्ष श्रीनिवास, वी. (1992) के द्वारा किये गए अध्ययन के निष्कर्ष के सदृश है।

पाँचवी परिकल्पना के परीक्षण से प्राप्त परिणामों (तालिका क्र.4.2.5) के आधार पर हम कह सकते है कि महिला हो या पुरूष हो यदि उसे अपेक्षित, उचित माहोल में काम करने का मौका मिलता है तो वे प्रभावी ढंग से कार्य भी करेंगे और अपने कार्य का उन्हें परितोष भी होता है। लेकिन यदि उचित वेतन व उनकी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति व्यवसाय से नहीं हो पाती तो वे व्यवसाय से संतुष्ट नहीं रह सकते। इसीलिए हम कह सकते हैं, कि लिंग का व्यावसायिक संतुष्टि पर कोई असर नहीं होता है।